International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 7.328
Vol.9 No.2 Nov – Dec 2021

संगीत की उत्पत्ति एवं विकास में विभिन्न धर्म–सम्प्रदायों का योगदान

डॉ. शिखा ममगाई
एसोसिएट प्रोफेसर (संगीत), पंडित ललित मोहन शर्मा परिसर, ऋषिकेश।

सारांशः

भारतीय संस्कृति का मूल आधार धर्म को माना जाता है। भारतीय समाज और संस्कृति में धर्म की प्रधानता है। विद्वानों का मानना है कि धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के कारण ही सम्पूर्ण विश्व में संगीत का आरम्भ हुआ है। संगीत उत्पत्ति की अधिकांश मान्यताओं के अनुसार संगीत की उत्पत्ति और इसका विकास भक्ति–भावना के फलस्वरूप ही हुआ है। भक्ति किसी धर्म विशेष तक सीमित नहीं है। प्रायः सभी धर्मों में भक्ति का स्वरूप समान ही दृष्टिगोचर होता है। यद्यपि प्रत्येक धर्म में भक्ति करने की विधि में भिन्नता हो सकती है, किन्तु सभी धर्मों में भक्ति करने का लक्ष्य एक ही है और वह है परमात्मा की प्राप्ति। लगभग सभी धर्मों में संगीत के माध्यम से भक्ति करने की परम्परा है। संगीत को मन की चंचलता को दूर कर उसे स्थिर करने वाली कला माना गया है। संगीत की स्वर लहरियाँ मानव मन को एकाग्र करने में सहायक होती हैं। अतः चित्त शुद्धिकरण और भक्ति में तन्मयता लाने का सबसे सरल और सुगम माध्यम संगीत को माना जाता है। विभिन्न धर्मों में संगीत की उत्पत्ति से सम्बन्धित कई मत प्रचलित हैं।

बीज शब्द :– धर्म, संगीत, भक्ति, सम्प्रदाय, गुरमति, सूफी।

संगीत–उत्पत्ति सम्बन्धी विभिन्न धार्मिक मान्यतायें–

- **हिन्दु धर्म के अनुसार–**

ओउम् ध्वनि से संगीतोत्पत्ति – हिन्दु धर्म की मान्यताओं के अनुसार कुछ विद्वानों का मानना है कि संगीत की उत्पत्ति ओउम् की ध्वनि से हुई है। विद्वानों के मतानुसार 'ओउम्' शब्द की निर्मिती 'अ, उ और म' इन तीन अक्षरों के संयोग से हुई है और इन तीन अक्षरों में तीन दैवीय शक्तियाँ समाहित हैं। 'अ' अक्षर में सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, 'उ' अक्षर में विष्णु तथा 'म' अक्षर में शिवजी का अंश होता है। यद्यपि 'ओउम्' ध्वनि उपरोक्त तीन अक्षरों के सहयोग से उत्पन्न होती है किन्तु यह ध्वनि एक अक्षर के समान ही होती है।

ब्रह्मा जी द्वारा संगीतोत्पत्ति – कुछ विद्वानों ने संगीत को ब्रह्मा जी द्वारा अविष्कृत बताया है। उन्होने माना है कि ब्रह्मा जी ने सर्वप्रथम संगीत कला शिव जी को प्रदान की तत्पश्चात् शिव जी ने इस कला को सरस्वती जी को दिया। सरस्वती जी ने इस कला को गन्धर्व, नारद को दिया तथा नारद ने इस कला को अन्य गन्धर्वों और किन्नरों को सिखाया। गन्धर्व और किन्नरों से यह कला महर्षि भरत आदि मुनियों को प्राप्त हुई और उन्होने इसका प्रचार–प्रसार भूलोक पर किया।

पं. दामोदर कृत 'संगीत दर्पण' में भी इसी प्रकार का उल्लेख प्राप्त होता है कि संगीत की उत्पत्ति ब्रह्मा जी के द्वारा की गई है–

''द्रुहिणेत यदन्विष्टं प्रयुक्तं भरते न च।
महादेवस्य पुरतस्तन्मार्गार्ख्य विमुत्कदम''।।

अर्थात् सर्वप्रथम ब्रह्मा जी ने संगीत की उत्पत्ति की तथा उस संगीत को भरतमुनि ने महादेव के सामने प्रस्तुत किया। वह संगीत मार्गी संगीत कहलाया जो मुक्तिदायक है।

शिव जी द्वारा संगीतोत्पत्ति – हिन्दु धर्म की एक अन्य मान्यता के अनुसार संगीत की उत्पत्ति शिव जी के द्वारा की गई है। शिव जी ने नारद जी द्वारा की गई वर्षों की योग साधना से प्रसन्न होकर उन्हें संगीत कला प्रदान की। नारद जी ने इस कला को भरतमुनि को प्रदान किया, जिन्होने इस कला का प्रचार–प्रसार पृथ्वी पर किया। इसी प्रकार के एक मत के अनुसार शिव जी ने पार्वती की शयन मुद्रा के आधार पर रूद्रवीणा का निर्माण किया तथा अपने पाँच मुखों से पाँच रागों भैरव, हिंडोल, मेघ, दीपक और श्री को उत्पन्न किया और पार्वती जी ने छठवें राग कौशिक की रचना की।

- **मुस्लिम धर्म के अनुसार संगीतोत्पत्ति–**

मुस्लिम धर्म के अनुसार संगीत की उत्पत्ति हजरत मूसा पैगम्बर के द्वारा की गई है। प्राचीन काल में हजरत मूसा पैगम्बर नाव की यात्रा कर रहे थे उसी समय उन्हें एक पत्थर दिखाई दिया और अचाक वहाँ एक दैवीय शक्ति प्रकट हुई, उस दैवीय शक्ति ने पैगम्बर से कहा कि वह उस पत्थर को सदैव अपने पास रखे तथा कुछ समय पश्चात् ही वर्षा होने लगी जिससे उस पत्थर के सात टुकड़ों से सात स्वरमयी ध्वनियों की उत्पत्ति हुई। इन्हीं सात स्वरमयी ध्वनियों से सात स्वरों का उद्भव हुआ।

- **ईसाई धर्म के अनुसार संगीतोत्पत्ति–**

कुछ विद्वानों का मानना है कि सर्वप्रथम ईसा मसीह ने ही सम्पूर्ण विश्व को संगीत का ज्ञान कराया था। उनके मतानुसार ईसा मसीह से पूर्व कोई सृष्टि नहीं थी और न ही कोई संगीत था। सबसे पहले स्वरों का ज्ञान ईसा मसीह को ही हुआ था।

विभिन्न धर्मों में संगीत का महत्व–

- **हिन्दु धर्म में संगीत का महत्व–** मध्यकाल में हिन्दू धर्म में विभिन्न सम्प्रदायों का उदय हुआ। हिन्दू धर्म से सम्बन्धित संत–महात्माओं के भक्तों एवं शिष्यों द्वारा उनके विचार एवं नियमों के अनुसार मर्यादाओं का अनुसरण करने के कारण समय–समय पर भारत में विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों की उत्पत्ति हुई। विभिन्न समयान्तरालों में राम, कृष्ण, शिव और शक्ति की उपासना करने वाले भक्त और आचार्यों ने संगीत के माध्यम से भक्ति करने की परम्परा को जन–जन तक पहुँचाने का सफल प्रयास किया, जिसके फलस्वरूप कई सम्प्रदायों का उद्भव हुआ। ये सम्प्रदाय अपने–अपने पृथक सिद्धान्तों का पालन प्राचीन परम्परा की भाँति करते हुये ईश्वर प्राप्ति के मार्ग की ओर अग्रसर हुए। इन सम्प्रदायों में रूद्र सम्प्रदाय, श्री सम्प्रदाय, हरिदासी सम्प्रदाय, निम्बार्क सम्प्रदाय, सनकादिक सम्प्रदाय, ब्रह्म सम्प्रदाय, रामानन्दी सम्प्रदाय, बल्लभ सम्प्रदाय, गौडीय सम्प्रदाय आदि प्रमुख हैं। इन सम्प्रदायों ने संगीत के माध्यम से भक्ति की परम्परा द्वारा संगीत के प्रचार–प्रसार में अविष्मरणीय योगदान दिया है। इन सम्प्रदायों के उदाहरण स्वरूप ही अन्य धर्म स्थलों में भी संगीत के माध्यम से भक्ति करने की परम्परा का आरम्भ हुआ।

उपरोक्त सभी सम्प्रदायों में भक्ति करने का माध्यम संगीत है। स्वामी हरिदास जी के सखी सम्प्रदाय का संगीत का क्षेत्र में विशेष योगदान है, तानसेन, गोपाल नायक, बैजू बावरा, रामदास इत्यादि महान संगीतकारों ने स्वामी हरिदास जी से ही संगीत की शिक्षा ग्रहण की थी। स्वामी जी ने अलग–अलग रागों में ध्रुपद शैली के अनुरूप पदों की रचना की। इस सम्प्रदाय के अन्तर्गत कीर्तन की व्यक्तिगत शैली का प्रादुर्भाव हुआ जो ध्रुपद गायन शैली से प्रभावित थी। इसका आरम्भ ख्याल शैली की भाँति आलाप से किया जाता था।

इसी प्रकार बल्लभ सम्प्रदाय में भी संगीत के माध्यम से भक्ति करने की परम्परा है। इस सम्प्रदाय में कुछ विशिष्ट नियमों का पालन करते हुए भगवान श्रीकृष्ण की आराधना की जाती है। इस सम्प्रदाय में अष्टयाम पद्धति का प्रचलन किया गया जिसमें भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति आठों प्रहरों के लिए निर्धारित पदों के गायन के माध्यम से की जाती है। जिसके अन्तर्गत भगवान श्रीकृष्ण की मंगला, राजभोग, उत्थापन, संध्या, शयन शैली आदि क्रियायें सम्मिलित होती हैं। संगीत के विकास में इन सम्प्रदायों का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इन सम्प्रदायों के संत कवियों एवं संगीतज्ञों ने अपने पदों की रचना इस प्रकार की है कि उन्हें शास्त्रीय संगीत की विद्या ध्रुपद–धमार शैली के अनुरूप किसी राग–रागिनी में सरलता से निबद्ध कर उनके साथ तबला, सितार आदि अन्य वाद्य यंत्रों की संगति सुगमता से की जा सकती है। इन सम्प्रदायों की रचनायें ध्रुपद–धमार शैली की भाँति होती है जिनमें विभिन्न राग–रागिनियों का प्रयोग किया गया है। वर्तमान में संगीत की दृष्टि से ये रचनायें अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

- **सिक्ख धर्म में संगीत का महत्व–** सिक्ख धर्म का उदय पंजाब प्रान्त में हुआ। इसका आरम्भ महान संत गुरू नानक देव जी द्वारा किया गया। इस धर्म को शिष्यों का धर्म भी कहा जाता है। सिक्ख धर्म में भी संगीत के माध्यम से उपासना करने की परम्परा है। सिक्ख धर्म में 'गुरू ग्रन्थ साहिब' में संकलित पदों का संगीतमय पाठ किया जाता है। सिक्ख धर्म में प्रत्येक श्रृद्धालु नित्य प्रति प्रातःकालीन दैनिक क्रियाओं से निवृत होकर प्रार्थना, सतनाम का जाप आदि करता है। सिक्खों की सामूहिक प्रार्थना इनके धर्मस्थल गुरूद्वारे में की जाती है।

सिक्ख धर्म की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण परम्परा गुरमति संगीत है जिसकी प्रस्तुति प्रतिदिन कीर्तनकारों द्वारा गुरूद्वारों में की जाती है। गुरमति संगीत की रचना गुरू नानक देव द्वारा की गई थी। इस संगीत प्रणाली के अन्तर्गत तत्कालीन संगीत के उन सभी तत्वों का समावेश किया गया है जिनके द्वारा वातावरण में आध्यात्मिकता का सृजन हो और जो मन को एकाग्र करने में सहायक हो। गुरमति संगीत में उत्तर भारतीय संगीत के राग–रागिनी, विभिन्न प्रान्तों की लोक परम्परा से उत्पन्न राग, सिद्ध, नाथ, जोगियों के प्रिय राग तथा दक्षिण संगीत के रागों को प्रयोग किया गया है।

गुरू ग्रन्थ साहिब में गुरमति संगीत परम्परा के अन्तर्गत उल्लिखित राग–रागिनियों के मौलिक शास्त्रीय स्वरूप का प्रचलन है। गुरमति संगीत में भारतीय शास्त्रीय संगीत के राग लगभग पाँच सौ वर्षों से अपने तत्कालीन स्वरूप में व्यवहृत हैं क्योंकि भारतीय संगीत में काफी थाट के स्थान पर बिलावल को शुद्ध थाट मानने की परम्परा से स्वयं को पृथक रखते हुए सिक्ख कीर्तनकारों ने गुरमति संगीत में प्रयुक्त रागों के परम्परागत स्वरूप की मौलिकता को व्यवहारिक रूप में स्थिरता प्रदान की है। गुरू ग्रन्थ साहिब में इकत्तीस मुख्य राग तथा इकत्तीस ही शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण रागों का उल्लेख किया गया है। ऋतुकालीन एवं लोक संगीत के रागों का भी प्रयोग मिलता है। गुरमति संगीत में राग के समय के अनुसार कीर्तन चौकियाँ करने की परम्परा है इसके अतिरिक्त सिक्ख जीवन शैली परम्परा में विभिन्न पर्व, त्यौहार एवं मांगलिक अवसरों व समारोहों पर कीर्तन करने की परम्परा है। सिक्खों के छठवें गुरू श्री हरगोविन्द साहिब के समय में दरबार साहिब में वार कीर्तन का प्रचलन था जिसे गुरमति संगीत का विशिष्ट स्वरूपगत भाग माना जाता है।

- **मुस्लिम धर्म में संगीत का महत्व–** मुस्लिम धर्म का उद्भव अरब देश में हुआ था। इस धर्म के प्रवर्तक हजरत पैगम्बर मुहम्मद साहिब माने जाते हैं। मुस्लिम धर्म में भी संगीत के माध्यम से भक्ति करने की परम्परा है। मुस्लिम धर्म में सूफी सन्तों द्वारा संगीत को बहुत महत्व दिया जाता है। सूफी सन्तों का आगमन भारत में मुस्लिम आक्रमणों से पूर्व हो चुका था। सूफियों की परम्परा पूर्णतः प्रेम पर आधारित परम्परा है, इन्होने ईश्वर तक पहुँचने का माध्यम प्रेम को बनाया अर्थात् निराकार और निर्गुण ईश्वर को प्रेम के माध्यम से प्राप्त करने का मार्ग सूफी मत है। ईश्वर की प्राप्ति हेतु व्याकुल भक्त ईश प्रेम में लीन होकर, स्वयं को भुलाकर भक्ति में मग्न होकर गाता और नृत्य करता है। ईश्वर प्राप्ति के लिए सूफी सन्तों ने संगीत को माध्यम बनाया। सूफियों ने भारतीय संगीत में अरबी–फारसी संगीत क़लाम, क़ौल, नक्श, कल्बाना, गुल, रंग, धमाल आदि शैलियों का निर्माण किया। भारत में सूफियों की परम्परा में क़ादरी, सुहरावर्दी, चिश्ती, हबीवी, नक्शबंदी, तफूरी, जुनैदी, अधमी, जैदी, हुवेरी, फिरदौसी, तूसी व सिकती सम्प्रदाय मुख्य रूप से प्रचलन में थे। चिश्ती परम्परा के लगभग सभी सूफ़ी संगीत के अत्यन्त प्रेमी रहे हैं, इनमें शेख निजामुद्दीन चिश्ती संगीत के प्रकाण्ड विद्वान थे। इन्हीं के शिष्य अमीर खुसरो ने सूफी संगीत को उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित किया। सूफ़ी संगीत के अन्तर्गत ख्याल, कव्वाली तथा काफी गायन का प्रचलन है जिसमें कव्वाली शैली विशेष रूप से प्रचलित है। कव्वाली कौल का विकसित रूप है। सूफ़ी सन्तों में अमीर खुसरो, बुल्लेशाह, शेख निजामुद्दीन चिश्ती, फरीद आदि का भक्ति काव्य और भक्ति संगीत की रचना में विशेष योगदान प्रशंसनीय है।
- **ईसाई धर्म में संगीत का महत्व–** ईसाई धर्म की गणना विश्व के प्रमुख धर्मों में की जाती है। इस धर्म का उद्भव पहली शताब्दी में ईसा मसीह के द्वारा किया गया। ईसाई धर्म में ईसा मसीह के जीवन तथा उनकी शिक्षाओं पर आधारित है। ईसाई धर्म का जन्म यहूदी धर्म से हुआ है। ईसाई धर्म में ईश्वर का सानिध्य प्राप्त करने हेतु पवित्र हृदय से भक्ति करने का नियम है। ईश्वर की उपासना के लिए भक्ति गीत गान भी ईसाई धर्म का अभिन्न अंग माना जाता है। ईसाई धर्म में सृष्टि के निर्माणकर्ता परमेश्वर के प्रति अपने भक्ति के भावों को संगीत के माध्यम से प्रस्तुत करने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। ईसाई धर्म के पुरातन ग्रन्थों में प्राप्त काव्यगत रचनायें इस तथ्य को प्रमाणिक करती हैं। ईसाई धर्म के 'स्त्रोत ग्रन्थ' नामक ग्रन्थ में एक सौ पचास स्त्रोत गीतों का संकलन है। अतः अन्य धर्मों की भांति ईसाई धर्म में भी भक्ति, प्रार्थना के लिए संगीत को अनिवार्य माना गया है।
- **बौद्ध धर्म में संगीत का महत्व–** बौद्ध धर्म का उद्भव भारत की पावन धरा पर हुआ है। इस धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध है। बौद्ध धर्म का लक्ष्य सभी जीवों को ज्ञान के प्रकाश की प्राप्ति कराना है। बौद्ध धर्म के प्रचारकों ने प्रेम, पवित्रता, दया तथा प्रज्ञा का प्रचार सम्पूर्ण विश्व में किया। बौद्ध धर्म

में संगीत का प्रयोग भक्ति से सम्बन्धित क्रियाओं के लिए किया जाता है। गौतम बुद्ध ने संगीत कला को ईश्वर की आभा की भांति अर्थात् शुद्धता और पवित्रता का पर्याय माना है। बौद्ध काल में बौद्ध साहित्य का गायन करने वालों को वैतालिक कहा जाता था। पुरूषों द्वारा थेर गाथा तथा स्त्रियों द्वारा थेरी गाथा का गायन किया जाता था जिन्हें क्रमशः स्थविर और सतविरा कहा जाता था। बौद्ध कवि अश्वघोष अपने साथ संगीतज्ञों की टोली लेकर चलते थे तथा गायन के माध्यम से महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का प्रचार–प्रसार करते थे। बौद्ध धर्म में संगीत भक्ति करने का महत्वपूर्ण माध्यम था।

अन्य धर्मों की तरह जैन धर्म में भी धार्मिक क्रियाओं के लिए संगीत का प्रयोग किया जाता था। जैन धर्म के प्रचार के लिए संगीत को माध्यम बनाया जाता था। जैन धर्म के मुनि भी संगीत एवं नाट्य कला में पारंगत होते थे। इन कलाओं का प्रदर्शन धार्मिक समारोहों के अवसर पर किया जाता था।

निष्कर्ष –

उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विश्व के सभी धर्मों में संगीत का बहुत महत्व है। विभिन्न धर्मों की धार्मिक क्रियाओं में संगीत का प्रयोग अनिवार्य माना गया है। हिन्दू धर्म, मुस्लिम धर्म, सिक्ख धर्म, ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म तथा जैन धर्म की धार्मिक क्रियाओं हेतु संगीत अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

उपरोक्त सभी धर्मों ने अपने धर्म के प्रचार–प्रसार का माध्यम संगीत को बनाया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. जोशी, उमेश, भारतीय संगीत का इतिहास, मानसरोवर प्रकाशन महल–1957, पृष्ठ–02
2. भक्ति संगीत अंक, संगीत पत्रिका जनवरी 1990, संगीत कार्यालय, पृष्ठ–31
3. बावरा, जोगिन्दर सिंह, भारतीय संगीत की उत्पत्ति एवं विकास, ए. बी. एस. पब्लिकेशंस जालन्धर, पृष्ठ–10–65
4. सिंह, गुरनाम, सिख म्यूजिकोलोजी, कनिष्क पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृष्ठ–04
5. संगीत कला विहार, पत्रिका मार्च–2015, अखिल भारतीय गन्धर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन, पृष्ठ–7
6. सक्सेना, डॉ. राकेश बाला, मध्ययुगीन वैष्णव सम्प्रदायों में संगीत, पृष्ठ–18
7. माथुर, डॉ. नीता, संगीत पत्रिका–मार्च–2013, हवेली संगीत पुष्टिमार्गीय पद गान, पृष्ठ–29
8. गुरमति संगीत अंक, जनवरी–फरवरी–1997, संगीत कार्यालय हाथरस, गुरमति संगीत की व्यवहारिक परम्परा, पृष्ठ–20